



‘राम’ आत्मा राम का मर्म है

कश्मकश की स्थिति में आ सकता है और शक कर सकता है! एक देवता को यह शांति भा

नहीं देता। तो निश्चित रूप से यह मनुष्य की बात होगी, क्योंकि आत्मा को भी राम कहा जाता है, आत्मा राम। परमात्मा के संदर्भ में भी परमात्मा

है। इसी आत्मा राम की कहानी (कल्पयुज्ज्वल की स्थिति) को ही तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में चित्रित किया है। और वो चित्रण इस तरह से हो गया कि श्री राम, जो अयोध्या के राजा थे, वो एक धोबी के ताना मारने से सीता की अग्नि परीक्षा लेने लगे। यहां धोबी का सीधा-सा अर्थ है कि जो निचले तबके का है, छोटी सोच वाला है, अपने संकल्पों में जिसके बल नहीं है, जो नकारात्मक भाव से

ग्रसित है, जो अवसाद से ग्रसित है, जो विकारों से त्रस्त एवं तनावग्रस्त है। ऐसे लोगों को धोबी कहा गया है। तो हम सभी भी बिना विचार किये, बिना विवेक शक्ति का इस्तेमाल किये, बिना सबसे राय-मशवरा किये निर्णय ले लेते हैं। इसलिए हे राम के स्वरूपों! थोड़ा विचार करके देखो, कि

समाज हमसे है, हम समाज से नहीं हैं। कहने का भाव है कि समाज हमसे बनता है, हम समाज से नहीं बनते। मैं समाज हूँ। तो समाज में घटने वाली हर घटना हमारे से शुरू होती है और हमारे पर ही खत्म होती है। समाज हमारे लिए निर्णय नहीं ले सकता कि हमें ऐसा करना चाहिए। प्रजातंत्र आज है, तो इसका मतलब ये नहीं है कि समाज हमेशा ऐसा ही रहा है। तभी तो आज इतनी बुराइयाँ हैं, इतनी तकलीफें हैं, क्योंकि आज समाज निर्णय ले रहा है आत्मा राम का, कि आपको ऐसा करना चाहिए।

‘रामायण’ चरित्र है हमारे कर्मों का। कोई ऐसे रामचन्द्र जी, जो देवता हों, वो ऐसा निर्णय ले ही नहीं सकते। और आज हम सारे समाज के सो कॉल्ड कहे जाने वाले मेधावी लोग, पढ़े-लिखे लोग रामचरितमानस का उदाहरण देकर उन सारे कर्मों को अंजाम देते हैं जो राजा राम ने कभी किया ही नहीं होगा। तो ये विचारणीय प्रसंग है। इसलिए आत्माओं को राम की व्यथा देखकर दुःखी होने की जरूरत नहीं है, बल्कि हर मनुष्य आत्मा को स्वयं में विराजित, अपने आत्मा राम को चेक करने की जरूरत है कि मैं कहीं समाज की सोच के साथ तो नहीं चल रहा हूँ! क्योंकि समाज में नकारात्मकता और बुराई भरी हुई है, तो वो तो विकार युक्त निर्णय ही लेंगे ना!

तो हे मानस प्रेमियों! थोड़ा-सा अपनी सोच के दायरे को बड़ा करो, अनुभव से देखो, परखो, समझो कि आज का कलियुग, जिसमें हम सभी हैं, उसमें इस सोच को देखते हुए भी कई बार हमारे मुंह से यही निकलता है कि कब रामराज्य

आयेगा। तो ऐसे राम के राज्य में तो कोई भी ऐसा खिटपिट करने वाला, गलत करने वाला, अविवेकी नहीं होगा, ये पक्का है। जरूर ये बातें थोड़ी-सी अटपटी, ऊपर-नीचे लग रही होंगी, लेकिन हैं बिल्कुल सही।

तो इस दशहरे पर आत्मा राम को रावण रूपी नकारात्मकता से, विकारों से छुड़ाने का प्रयास करें, इसको जलायें, ना कि स्थूल रावण को जलाकर दशहरा मनायें। इसीलिए कहा गया कि राम नाम में ज़्यादा ताकत है, न कि राम में। क्योंकि राम भगवान का नाम है, ना कि राम भगवान हैं। इसीलिए दुनिया में राम शब्द को दैहिक श्री राम के साथ जोड़ा जरूर, लेकिन उस राजा राम को भी पत्थर पर ‘राम’ लिखना पड़ा ताकि वो पत्थर विषय-वासनाओं रूपी सागर पर तैरने लगे, डूब न जायें। तो इससे क्या सिद्ध होता है कि राम भगवान का नाम है, ना कि राम भगवान हैं।

राम से बड़ा राम का नाम का मतलब आत्मा राम जरूर शक्तिशाली रही होगी, तभी तो उसकी चर्चा है, तभी तो उसपर काव्य हैं, महाकाव्य हैं। तो आने वाले समय में हम सभी को यदि समय से पहले समय को बदलना है, तो आत्मा राम पूरी तरह से जागृत होनी चाहिए और उस परमात्मा राम से जुड़ाव भी होना जरूरी है। तभी संभव है समय परिवर्तन और तभी विजयादशमी के साथ हम न्याय कर पायेंगे।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

राम के अनेकों रूप, अनेकों नाम, अनेकों संदर्भ, अनेकों प्रसंग, और अनेकों व्याख्यान हैं, सभी का कहना, सभी का अलग-अलग रूप से संदर्भित करना राम के गुणों को दर्शाता है। इसमें राम के एक दैहिक रूप और एक निराकारी रूप का वर्णन कई संतों-महात्माओं ने किया है। लेकिन पढ़ने और समझने वालों ने उसकी व्याख्याएं अलग-अलग कर दीं। जीवन की एक दुःखद घटना अयोध्या के राजा श्री रामचन्द्र जी को उस अस्तित्व में ले जाती है कि अरे कमाल है, इतने बड़े देवता और वो किसी छोटे से व्यक्ति के कहने से असमंजस में आ जायें! ये बात कुछ हजम नहीं होती। जिसका विवेक उच्च कोटि का है, वो व्यक्ति, वो भी देवता, कैसे वो

को राम के साथ जोड़ा गया, परमात्मा राम। तुलसीदास जी ने हमेशा तीन राम की चर्चा की है। कहते थे, एक राम दशरथ का बेटा, जो दशरथ के बेटे श्री राम हैं, वो अलग हो गए, मतलब देहधारी मनुष्य की बात हो गई। दूसरा राम-आत्मा राम और तीसरा राम परमात्मा राम। तो जो देहधारी मनुष्य राम है, माना आत्मा राम जब देह लेता है श्रेष्ठता के आधार से, तो वो श्री राम बनता है। अब वही श्री राम माना आत्मा राम आज कलियुग में बहुत छोटी-छोटी बातों पर, इधर-उधर का सुनकर भ्रम की स्थिति में आ जाता है, परेशान हो जाता है, सम्बंध तोड़ लेता है, सम्बंधों में बिखर जाता है, सबके साथ रहते हुए भी अपनी नेचर वैसी बना लेता



उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : मैं डॉक्टर हूँ और मैं आई सर्जन की पढ़ाई पढ़ रही हूँ। मुझे ज्ञान से जुड़े सात साल हो गये हैं। मेरी समस्या ये है कि बचपन में मेरे मम्मी-पापा मुझे बहुत डांटते और मारते थे। मेरे मम्मी-पापा भी डॉक्टर हैं, जिससे वो बहुत बिजी होने की वजह से ना तो वो मुझे अपना समय दे पाये और न ही कभी प्यार से बात की। पर इसका इफेक्ट मेरे ब्रेन पर बहुत ज़्यादा पड़ा है। मैं बहुत डरने लग गई हूँ छोटी-छोटी बातों पर। और मैं अपनी पढ़ाई पर कॉन्संट्रेट भी नहीं कर पा रही हूँ। कृपया बतायें मैं क्या करूँ?

उत्तर : ये बहुत से केस होते हैं कि बच्चों को प्यार नहीं मिलता। माँ-बाप बहुत बिजी रहते हैं। तो बच्चे फिर और जगह प्यार की तलाश करते हैं या ये माँ-बाप की डांट जो है उन्हें भयभीत कर देती है। तो मैं आपको ये कहना चाहूँगा कि आप पहला तो ये संकल्प करें कि स्वयं भगवान मेरा साथी है। ठीक है आपको लौकिक माँ-बाप से प्यार नहीं मिला। आप अपने पारलौकिक पिता से प्यार लेती रहें। रोज सवेरे उठकर उनसे बातें किया करें। उनसे नाता जोड़ लें कि तुम ही मेरे सच्चे मित्र हो, मात-पिता हो तो उनकी ओर से प्यार की फीलिंग आपको आने लगेगी। आपका चित्त आनंदित होने लगेगा।

आप बिल्कुल भी भयभीत न हों। आप रोज सवेरे उठकर ये संकल्प किया करें मैं सर्वशक्तिवान की संतान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। निर्भय हूँ ये रोज सात बार करूँगे। और मैं आपको कहूँगा कि अपने माँ-बाप को सच्चे मन से क्षमा कर दें। और उसके साथ उनको थैंक्स दो कि तुमने हमें पाला-पोसा, तुमने हमें यहाँ तक पहुंचाया। मेरे मात-पिता तुम दोनों को बहुत-बहुत धन्यवाद। तो आपको जो भय है वो भी समाप्त हो जायेगा और आपकी एकाग्रता भी सुन्दर हो जायेगी। रोज 15 मिनट सवेरे और 15 मिनट शाम को मेडिटेशन करें। और अपने को स्वमान दें कि मैं स्वराज्यधिकारी हूँ, मन-बुद्धि की मालिक हूँ। अपनी बुद्धि को कमांड दें। और प्रोग्रामिंग दें कि हे मेरी बुद्धि जो मैं पढ़ूँ वो सब याद कर लेना। तुमको आज कॉलेज में जो पढ़ाया जाये तुम उन सबको ग्रहण कर लेना। और एग्जाम के समय इमर्ज कर लेना। दो बार सवेरे-शाम ये प्रैक्टिस भी कर लेंगी। इससे आपका चित्त शांत हो जायेगा।

प्रश्न : मेरा नाम किरण है। मैं कोलकाता से हूँ। मुझे हर चीज़ से डर लगता है। घर से बाहर निकलती हूँ तो भी एक भय सा बना रहता है। और ट्रेन में सफर करने में भी मुझे बहुत डर लगता है और जो छोटे-छोटे जीव जन्तु हैं

उनसे भी मेरे जीवन में बहुत ज़्यादा डर बना रहता है। मैं इस डर से बहुत ज़्यादा परेशान हूँ। कृपया बतायें कि मैं इस डर से कैसे मुक्ति पाऊँ?

उत्तर : एक तो डर और दूसरा परेशान। वास्तव में ये जो डर है पूर्व जन्मों से आया है। कुछ न कुछ ऐसी घटना उनके साथ हुई है मान लो कुत्ते ने काट लिया और बहुत कष्ट हो गया। सांप ने काट लिया और उसका जहर चढ़ गया। बहुत उपचार हुआ उसकी

मन की बातें
- राजयोगी ब. कु. सूर्य

मृत्यु हो गई या आग में जल गया वो व्यक्ति किसी भी तरह से। तो वो भय उनके सब्कॉन्शियस माइंड में भरा रहता है। वो जहाँ भी जायेंगे, ट्रेन में भी बैठेंगे तो लगेगा कि कहीं गिर न जाऊँ। तो अपने को निर्भय बनाने के लिए मैं आत्मा हूँ, देह से न्यारी हूँ। मैं आत्मा अजर-अमर-अविनाशी हूँ। एक तो प्रैक्टिस आपको करनी होगी। और दूसरा जब आप घर से बाहर निकलें तो दो मिनट शांति में बैठो। और संकल्प करें कि मेरे साथ तो सर्वशक्तिवान है। वो हजार भुजाओं सहित मेरे साथ है। मैं स्वयं भी मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। और जहाँ भगवान साथ हो वहाँ मेरा कुछ बिगड़ेगा ही नहीं। रोज सवेरे उठकर 21 बार ये संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। लास्ट में संकल्प करें कि मैं निर्भय हूँ। भय से मुक्त हूँ। 21 बार ये संकल्प करने के पश्चात् आपके सब्कॉन्शियस माइंड में जो भय समायाना हुआ है वो धीरे-धीरे निकल जायेगा। और फिर आप अपने जीवन की यात्रा का आनंद ले सकेंगी।

प्रश्न : मेरा नाम अभिजिआ है। बाबा ने कहा है कि किसी को दुःख नहीं देना। लेकिन मेरे पति मेरे कारण बहुत दुःखी रहते हैं। और मुझे ऐसा लगता है कि क्योंकि मैं पवित्रता का पालन करती हूँ, शायद इस कारण वो बहुत दुःखी रहते हैं। तो क्या ये मेरे से पाप हो रहा है उनको दुःख देने का?

उत्तर : एक सत्य मार्ग पर चलने के लिए किसी को

दुःख हो भी जाता है तो मान लीजिए हमारे भारत में विभिन्न धर्मों में बड़े-बड़े लोग हो गए, उदाहरण महात्मा बुद्ध का ले लें। उन्होंने गृह त्याग किया। माँ-बाप दुःखी हो गए, पत्नी थी, बच्चा था। समझ सकते हैं कि कितने दुःखों की लहर उनके अन्दर आई होगी कि एक कहीं राजकुमार जंगलों में भटक रहा होगा। क्या-क्या सोच के वो दुःखी हो रहे होंगे। अब उनके दुःख को देखकर मान लो महात्मा बुद्ध जी वापिस आ जाते कि मेरे माँ-बाप तो बड़ा दुःखी हो रहे हैं, मुझे ये सब नहीं करना है। तो आज उनके माध्यम से जो संसार में बौद्ध धर्म फैला, जिससे लोगों को एक मध्यम मार्ग जानने को मिला, जिससे अनेकों को सुख मिला। अनेकों का कल्याण हुआ वो न हो पाता। और आपकी जो प्योरिटी है वो प्रभु की आज्ञा के आधार पर अपनाई गई है। आपकी प्योरिटी तो संसार के कल्याण के लिए है। प्रकृति को फिर से बल प्रदान करने के लिए है। इसलिए एक व्यक्ति की चिंता छोड़ कर, विश्व कल्याण का मार्ग जो आपने चुना है उसकी ओर अग्रसर होना चाहिए। और उन्हें भी रोज 10 मिनट किसी भी टाइम प्योर वायब्रेशन दें। ताकि उनका मन भी पवित्र बनने के लिए तत्पर हो उठे। उनकी वासनायें शांत होंगी तो वो भी सुखी हो जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

1084
1060
578